
दिनांक 06-09-1975 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित मुरली कविता

तीन कम्बांड स्वरूप

व

अन्तःवाहक रूप द्वारा परिभ्रमण

अपने तीनों कम्बांड स्वरूप की स्मृति जगाओ
अनादि संगमयुगी सतयुगी स्वरूप देखते जाओ

अपना संगमयुगी शिवशक्ति का स्वरूप जगाओ
बाप को साथी बनाकर खुद को विजयी बनाओ

बाप साथ निभा रहे इसका पूरा फायदा उठाओ
संसार के बन्दर बन्दरी बनने से खुद को बचाओ

खुद को अकेला समझा तो उदासी को पाओगे
अतीन्द्रिय सुखमय जीवन से वंचित हो जाओगे

बाप की संगत छोड़कर वस्तु वैभव में ना खोना
बाप से वायदे भूलकर अलमस्त कभी ना होना

बाप जैसा आज्ञाकारी सेवाधारी खुद को बनाना
फरमान पर चलकर तुम बाप का साथ निभाना

भक्तों की यही अभिलाषा देवियां प्रगट हो जाए
चैतन्य रूप में वरदानी बन वरदान कोई दे जाए

शक्तियों अपनी जिम्मेदारी भक्तों प्रति निभाओ
सबके प्रति मन में तुम रहम के संस्कार जगाओ

बाप समान भक्तों के चारों ओर चक्कर लगाओ
फरिश्ता बनकर बाप संग अपना पार्ट बजाओ

बोझमुक्त होकर दिनचर्या बाप समान बनाओ
केवल विश्व सेवा के प्रति बाप से योग लगाओ
